Changing Nature of Economic Activities: Trade and Transport

Trade and Transport

- औद्योगिक विकास के लिए व्यापार एवं परिवहन बहुत महत्वपूर्ण हैं।
- परिवहन एवं व्यापार एक दूसरे पर निर्भर एवं सहयोगी प्रक्रियाएं हैं।
- प्राचीन काल में दिल्ली से मुम्बई की यात्रा पैदल, बैलगाड़ी या घोडागाडी से महीनों में पूरी होती थी वही सफर आज वायुयान से केवल 1 से 2 घंटे में पूरा किया जा सकता है।
- इसी प्रकार व्यापारिक गतिविधियां भी क्षेत्रीय से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंच गयी हैं।
- आधुनिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप परिवहन के साधनों एवं व्यापारिक स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

Changing Nature of Economic Activities: Transport

- प्राचीन काल में मानव जीवन सरल था।
- अधिकांश समाज आत्मनिर्भर होते थे अतः मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर लेता था।
- लेकिन बढ़ती जनसंख्या के कारण आत्मनिर्भरता समाप्त हो गई। अब वह अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता है। साथ ही साथ आर्थिक क्रियाओं में भी परिवर्तन आता गया।
- अतः मानव को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए परिवहन के साधनों एवं मार्गों की आवश्यकता पड़ी।
- प्रारंभ में मार्गों के रूप में नदियों का प्रयोग किया जाता था लेकिन बाद में समुद्र पार के देशों का ज्ञान होने पर जलमार्गों का विकास हुआ तथा विभिन्न किस्मों के जलयान बनने लगे।

सडक परिवहन

- मानव ने परिवहन के लिए सबसे पहले सड़कों का ही विकास किया होगा।
- सर्वप्रथम सड़कों का विकास कहाँ एवं कब हुआ यह कहना मुश्किल हैं लेकिन सर्वप्रथम रोमन साम्राज्य में पास–पास पत्थर रखकर पक्की सड़के बनाने का प्रयास किया गया था। यूरोप में जन्मी यह कला वर्तमान में पूरे विश्व में है।
- 18वी सदी से अब तक डामर एवं कंक्रीट की सहायता से ग्रामीण सड़कों के लेकर राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय राजमार्ग तक बना दिए गए हैं।
- मोटर वाहनों का भी सर्वाधिक विकास 20 वी सदी में ही हुआ है।

जल परिवहन

- यह लंबी दूरी के लिए सबसे सस्ता परिवहन है।
- सड़क के बाद मानव का दूसरा मार्ग जल ही रहा होगा।
- प्रथम जल परिवहन कब व कहां शुरू हुआ यह कहना भी कठिन है। लेकिन लकड़ी व पशुओं की खाल की नाव से आधुनिक बड़ें जहाज तक का सफर मानव ने एक लंबें समय के बाद तय किया है।
- वर्तमान के जहाज मशीनों से स्वत: ही चलते हैं। हजारों टन सामान का परिवहन कर सकते हैं।
- 18वीं सदीं से ही मानव जल परिवहन के लिए नहरें भी बनाने लग गया। स्वेज, पनामा, गोटा नहर आदि इसके उदाहरण है।

रेल परिवहन

- विश्व की पहली आधुनिक रेल 1825 में लिवरपूल एवं मानचेस्टर (16 अप्रैल 1853–भारत) के बीच चलाई गई थी।
- इससे पहले लकड़ी के डंठल पर भारी वस्तुओं को हाथी के माध्यम से खिसकाया जाता था।
- पहले छोटी रेलें थी जो कोयले से चलती थी धीरे–धीरे डीजल और वर्तमान में विद्युत से चलने वाली रेलों का विकास किया गया है जो कम समय में अधिक दूरी एवं वस्तु को ले जा सकती हैं।
- 19वीं सदीं में रेलों का सर्वाधिक विकास हुआ।
- वर्तमान में कुछ रेलें तो 500 किमी. प्रतिघंटा से भी अधिक गति से चलती हैं।

वायु परिवहन

- ओरविले एवं विलबर राइट नामक दो अमेरिकन भाइयों ने 1903 में पहला हवाई जहाज उत्तरी कैरोलिना राज्य में 4 मील की दूरी तक उडाया था।
- वर्तमान के वायुयान हजारों किमी की दूरी कुछ घंटो में सैंकड़ों लोगों और कुछ सामान के साथ तय कर लेते हैं। 20वीं सदीं वायुयानों की दौड़ होने लगी इस प्रकार विज्ञान के द्वारा परिवहन में क्रांति छा गयी थी।

Changing Nature of Economic Activities: Transport

- सड़कों का तीव्र गति से विस्तार
- वैकल्पिक साधनों का विकास
- वैकल्पिक वाहनों का विकास
- द्रूत गति के साधनों का विकास
- अन्तर्राष्ट्रीय परिवहन का विकास
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए जल एवं वायु परिवहन का अधिक उपयोग
- निजी वाहनों का अधिक प्रयोग

Changing Nature of Economic Activities: Trade

- वस्तुओं का क्रय–विक्रय व्यापार कहलाता है।
- पृथ्वी पर संसाधनों के वितरण की असमानता ही व्यापारिक क्रिया का मूल आधार है अर्थात् विभिन्न स्थानों की उत्पादित वस्तुओं में भिन्नता होने के कारण ही व्यापार जन्म लेता है।
- सभ्यता के प्रारंभ से ही व्यापार मानव क्रिया–कलापों का अंग रहा होगा।
- मुद्रा के चलन से पहले वस्तु विनिमय द्वारा व्यापार किया जाता था।
- मानव सभ्यता के विकास और प्रसार में व्यापार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
- नए अधिवासों के जन्म ने प्राचीन काल से ही व्यापार को बढ़ावा दिया है।

Changing Nature of Economic Activities: Trade

- वर्तमान में अनेक देशों ने व्यापारिक संगठन बनाकर अपने द्वारा किए गए समझौतों के आधार पर दोहरे करों को कम करके व्यापार को बढ़ा रहे हैं।
- आज विश्व के देश कई व्यापारिक गुटों जैसे–**WTO, GATT, OPEC, NFTA**, यूरोपीयन स्वतंत्र व्यापार संघ, यूरापीय साझा बाजार, आसियान, सार्क, ब्रिक्स में बंट गए हैं और ये अपनी वस्तुओं का अयात–निर्यात गुट द्वारा निर्मित नीतियों द्वारा करते हैं।
- इससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन मिला है। अतः वह तेजी से बढ़ रहा है।

Changing Nature of Economic Activities: Trade

- व्यापार की मात्रा की प्रकृति में परिवर्तन
- व्यापार के स्तर में परिवर्तन
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में निरन्तर वृद्धि
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक देशों के व्यापारिक गुट
- व्यापार में वैश्वीकरण एवं **WTO** की बढ़ती भूमिका
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में विकसित देशों का अपेक्षाकृत अधिक वर्चस्व
- विशिष्टीकरण की प्रवृति
- वस्तुओं के विकल्पों में वृद्धि
- देशों की व्यापारिक निर्भरता में वृद्धि
- निर्मित वस्तुओं के व्यापार में निरन्तर वृद्धि

निष्कर्ष

- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक परिवहन एवं व्यापार में प्रकृति में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है।
- फिर भी आज व्यापार एवं परिवहन का विकास सभी देशों में समान नहीं है।
- अतः सयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व व्यापार संगठन, विश्व बैंक एवं अन्य आर्थिक संगठनों को इस दिशा में उचित कदम उठाने की आवश्यकता है।